**International Journal of Advanced Education and Research**
**ISSN: 2455-5746**
**Impact Factor: RJIF 5.34**
**www.alleducationjournal.com**
**Volume 3; Issue 6; November 2018; Page No. 53-57**

# बघेली रूपसाधक रूपिमिक विश्लेषक की व्याकरणिक कोटियाँ

**दिब्य शंकर मिश्र [1], डॉ. पीयूष प्रताप सिंह [2]**

[1-2] सूचना एवं भाषा अभियांत्रिकी केन्द्र, भाषा विद्यापीठ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत।

## प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध-पत्र में बघेली रूपसाधक रूपिम विश्लेषक की व्याकरणिक कोटियाँ पर चर्चा की गई है जिसमें बघेली संज्ञा शब्दों का एकवचन से बहुवचन में कैसा परिवर्तन होता है। बघेली के कितने अनुसर्ग या विभक्ति चिन्हों की भी चर्चा किया गया है। बघेली सर्वनाम कितने हैं और उनका एकवचन एवं बहुवचन कैसे बनता हैं उनके कुछ नियम भी बनाए गए हैं जिनका जिक्र किया गया है। बघेली क्रिया की भी जिक्र किया गया है। बघेली प्रत्यय की भी चर्चा किया गया है की प्रत्यय से कैसे नए शब्दों का निर्माण किया जाता है। बघेली विशेषण की भी चर्चा की गई है। व्याकरणिक कोटियाँ, लिंग, वचन, पुरुष, काल, पक्ष, वृत्ति, कारक आदि की विस्तृत से चर्चा की गई है।

## संज्ञा

प्राणी, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। बघेली में जातिवाचक,व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञायें मिलती हैं किंतु जातिवाचक और भाववाचक संज्ञाओं का महत्त्व अधिक है-

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| मेहरी | मेहरियाँ |
| घ्वाड़ | घ्वड़बा |
| रुख | रुखबा |
| मेंड़ | मेंड़बा |

## बघेली के अनुसर्ग या विभक्तियाँ निम्नलिखित हैं

| | |
|---|---|
| कर्ता | अ |
| कर्म | का |
| संप्रदान | कहा |
| अपादान | ते |
| करण | से, ते, तार |
| संबंध | कर, केर, के केर |
| अधिकरण | में, माँ |

1) बघेली में कर्ता के अनुसर्ग 'ने' का अभाव है। कभी-कभी उसे दीर्घ बनाकर और कभी हस्व से ही काम चलाते हैं।
2) संबंध के अनुसार अनुसर्ग में लिंग के अनुसार परिवर्तन नहीं होता है।
3) विशेषण के रूप तथा करण के रूप में भी लिंग के आधार पर परिवर्तन नहीं होता है।

## सर्वनाम

जो संज्ञा के बदले प्रयोग किया जाता है उसे सर्वनाम कहते हैं।

| बघेली सर्वनाम | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| मैं | मैंय | हम्म |
| तू | तैय | तुम्म |
| आप | अपना | अपना पंचे |
| यह | इंया | ईं |
| वह | वया | वुईं |
| जौन | जउन | जें |
| तौन | तउन | तें |
| कौन | को | कउन |
| मुझे | मोहीं | हमहीं |
| तुझे | तोही | तुमहीं |
| हमारा | हमहार | हम्हाराय |
| मेरा | मोर,म्वार | हमार |
| तेरा | तोर, त्वार | टोंहार |
| उनका | उनखर | उनखेर |
| इनका | इनखर | इनखेर |
| जिनका | जिनखर | जिनखेर |
| तिनका | तिनखर | तिनखेर |

1) हिंदी के 'क्या' को बघेली में 'काह' या 'का' बोलते हैं। इसके तिर्यक रूप 'कई', 'कयी' होते हैं।
2) कोई का प्रयोग 'कउनउ', 'कउनी', 'कोऊ' आदि होता है।
3) हिंदी के 'कुछ' का प्रयोग बघेली में भी इसी रूप में होता है।

## क्रिया

जिसमें कार्य करने का बोध होता है उसे क्रिया कहते हैं।

वर्तमान काल (मैं यहाँ रहता 'हूँ')

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | हूँ, हौं, आँ | हाँयेन, हइ |
| 02 | है | हौ, अहेन |
| 03 | हइ | हाँइ, अहेन, अहैं, आँ |

भूतकाल (मैं यहाँ रहता 'था')

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | रहेऊँ, रहये | रहेन, रहेनते, रहयेते |
| 02 | रहा, रहे | रहें, रहेन ते, रहें ते |
| 03 | रहा | रहेन ते, रहेन तो, रहें ते, रहें |

भविष्य काल (यदि मैं होऊँ )

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | होऊँ | होन |
| 02 | हास, हाव | होइहेस, होबेइ |
| 03 | हाय, हाँय | होइ |

(मैं होऊँगा )

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | होत्येऊँ | होव्, होबै, होत्यों |
| 02 | होइहेस | होबा |
| 03 | होई | होइहौं |

(मैं हुआ )

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | भयउ | भयेन |
| 02 | भयेस् | भयेन |
| 03 | भ | भा, भयेन, भवा |

संभाव्य वर्तमान क्रिया (यदि मैं देखूँ )

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | देखौं | देखेन् |
| 02 | देखस्, देखिस | देखन्, देखब, देखतेंउ |
| 03 | देखि | देखाँय |

संभाव्य भविष्यत् (मैं देखूँगा )

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | देखत्येऊँ, | देखब, देखिब, देखतेउ |
| 02 | देखिहेस, देखिहस, देखिबै, देखिबेस | देखिबा, देखिहउ |
| 03 | देखी | देखिहैं |

संभाव्य अतीत (यदि मैंने देखा )

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | देखह, देखी | देखेन, देखिन |
| 02 | देखेह, देखिह | देखेंहे, देखिह |
| 03 | देखी, देखि | देखेन, देखिन |

संभाव्य अतीत (यदि मैं देखा होता ) पुलिंग

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | देखत्येहूँ | देखत्येन् |
| 02 | देखत्येह | देखत्येंह |
| 03 | देखत्येइ | देखातियन् |

स्त्रीलिंग

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | देखितियऊँ | देख्येतिन |
| 02 | देखतियह | देख्यतिहिं |
| 03 | देखतियइ | देख्यतिन |

निश्चित वर्तमान काल (मैं देख रहा हूँ )

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | देखत | देखत्ये हैयेन |
| 02 | देखत हइ | देखत हन, देखत हयेन |
| 03 | देखता | देखता हउ |

घटित होने वाला अतीत (मैं देख रहा था )

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | देखत रहेउ | देखत तें, देखत रहेन |
| 02 | देखत तें, देखत रहा | देखत तें, देखत रहेन |
| 03 | देखत ते, देखत ता, देखत रहा | देखत तें, देखत रहेन |

(मैंने देखा है )

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | देख हौं | देखहैं, देखिहैं |
| 02 | देखेस है, देखिस हइ | देखें हन, देखेन, देखिन |
| 03 | देखेस हइ, देखिस हइ | देखे, देखेन, देखे हन, देखें |

(मैंने देखा था )

| क्रमांक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 01 | देखतूँ, देखे ते, देखेता, देखत रहा | देखेन, देखेन तें, देखें तें, देखे रहेन |
| 02 | देखेह ते, देखेता, देखत रहा | देखेंह, देखेंते, देखेत रहेन |
| 03 | देखी ते, देखीता, देखित रहा | देखेन तें, देखेन रहेन |

**बघेली के कुछ भाषाई नियम**

1) बघेली में सकर्मक क्रिया के अतीत के रूप में कृत वाच्य में ही चलते हैं।
2) क्रिया वाचक संज्ञा के रूपों में ब्, त्, आदि लगाते हैं- देखब्, खाब्, जाब्, देखत्, खात्, जात् आदि।
3) क्रियाओं के तिर्यक रूप में परिवर्तन नहीं होता है।

4) संबंध की विभक्तियों में लिंग के अनुसार परिवर्तन नहीं होता है। जैसे-
   a) राम केर ध्वाड़, सीता केर ध्वाड़।
   b) ढेरिया केर सारी, मरद केर पगड़ी।
5) विशेषण के रूप में भी स्त्रीलिंग, पुलिंग के रूपों में परिवर्तन नहीं होता है। जैसे-
   a) कोमर नरिया, करू बइर, कोमर पाथर, करू बेल।
   b) पातर ढेरिया, चाकर सास, पातर कठबा, चाकर मरद।
6) अतीत काल में अकर्मक क्रियाओं का रूप प्राय: एक ही तरह चलता है, जिसमें 'भयेऊँ' गयऊँ आदि का रूप ही चलता है।
7) बघेली में क्रिया के कुछ अनियमित रूप भी चलते हैं:-
   (क) होब् (होना) का अतीत कृदंतीय रूप 'भ' हो जाता है, 'उआ जात् भा', 'उआ खात् भा'।
   (ख) इसी प्रकार जाब् का अतीत कृदंतीय रूप 'ग्' हो जाता है। जैसे-
      (1). 'वा चला गा'।
      (2). 'वा नहिं गा'।
   (ग) कहीं-कहीं धातुओं के अंत का 'ए' 'या' में परिवर्तित हो जाता है-चँगेरि का चँगेरिया, गये का गया आदि।
   (घ) कभी-कभी बड़े अनिश्चित रूप देखने को मिलते हैं-पइसा द्या, पइसा द्याब, पाइसा 'दिहा'-'द्या' और 'द्याब' तो नियमानुसार हैं, पर दिहा रूप भिन्न है। इसी प्रकार देब, लेब, जाब, ख़ाब, करब, नियमानुसार हैं, पर इनके अतीत कृदंतीया रूप दीन्ह, लीन्ह, कीन्ह, -संभाव्य वर्तमान में भी प्रयुक्त होते हैं।
8) बघेली में अक्षर के अंत में या कभी-कभी मध्य में भी 'अ' का उच्चारण नहीं होता हैं, इसलिए अनेक शब्दों के बीच में संयुक्त व्यंजन बोले जाते हैं। यद्यपि इनमें लिखने के रूप अलग हैं किंतु उच्चारण का यह रूप लोकप्रिय है और बघेली के रूप-क्रिया को समझने के लिए इनकी जानकारी आवश्यक है। जैसे- नकटा, चीकन, जगना, हिचकी, सोचता, पाल्का, आदमी, फुदकी, कपटी, छिलका, कलसा, मनई, गमछा, आँचार आदि।
9) बघेली में व्यंजन-संयोग के समय भी अनुनासिक की रक्षा, पूर्ववर्ती ध्वनि में की जाती है। उस समय बघेली के अघोष स्पर्श प्रायः सघोष हो जाते हैं। जैसे-
   सच का साँच
   पंच का पाँच
   कंटक का काँटा
   स्कंध का काँधा
   कंपन का काँपब
   दंड का डाँड़।
10) बघेली में अन्, आव्, न्, ती, नी, आपा, आका, आई आदि प्रत्ययों का प्रयोग अधिक होता है। जैसे-
   **अन्-** रहेन, गयेन, ऐंठन, चलन, जलन, घेरेन, लेन, देन।
   **आव्-** घुमाव, चढ़ाव, कटाव, छिड़काव, छुड़ाव, जमाव, पछिताव, पहिराव, बचाव, बुलाव, चलाव, पड़ाव।
   **न्-** आन्, खान्, पान्।
   **ती-** बढ़ती, चुकती, घटती, पड़ती, गिनती।
   **नी-** करनी, धरनी, भरनी, कटनी, कथनी।
   **आपा-** बुढ़ापा, रँड़ापा, घरोपा।
   **आका-** धड़ाका, भड़ाका, धमाका, सड़ाका।
   **आई-** चतुराई, चिकनाई, डिंठाई, पंडिताई, ढलाई, खबाई, करुआई, चयरहाई।
11) बघेली में कुछ अविकारी क्रिया विशेषणों का भी प्रयोग होता है। जैसे- आज, कल्ह, परसों, नरसों, तरसों, अबेर, सबेर, इहाँ, उहाँ, आगे, पीछे, आमने, सामने आदि।
12) यौगिक क्रिया-विशेषणों का प्रयोग भी बघेली में कहीं-कहीं मिलता है। जैसे- हाँथेन-हाँथ, ठीकइ-ठीक, जब-कबहूँ, कबहूँ-न-कबहूँ, एकइ एक करिके, घरी-घरी आदि।
13) कालवाची क्रिया-विशेषण भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे- अब, तब, जब, कब, अबहूँ, कबहूँ,।
14) स्थानवाची क्रिया-विशेषण भी बघेली में मिलते हैं। जैसे- इहाँ, उहाँ, जहाँ, तहाँ, कहूँ।
15) दिशावाची क्रिया-विशेषण भी मिलते हैं। जैसे- इहेन, उहेन, इधर-उधर, किधर, आदि।
16) परिमाणवाची क्रिया-विशेषण भी मिलते हैं। जैसे- एतना, ओतना, केतना, तेतना, जेतना।

**बघेली के विशिष्ट विशेषण शब्द**

बघेली के विशिष्ट शब्द-कोश के अध्ययन में यहाँ के विशिष्ट विशेषण शब्दों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन शब्दों का प्रयोग बघेली की अपनी विशेषता है। जैसे-

| क्रमांक | विशेषण शब्द | अर्थ |
|---|---|---|
| 01 | अकरा कुहिर | बहुत मोटा। यह प्रायः मनुष्यों के लिए ही प्रयुक्त होता है। |
| 02 | अजलेय | जाली। दूसरों को धोखा देकर अपना काम साधनेवाला व्यक्ति अजलेय कहलाता है। |
| 03 | अड़मुड़ | पीछे पड़ जाने वाला। किसी भी काम को पूरा कर डालने वाला। यह शब्द प्रायः अकड़ के साथ काम पूरा करने वाले व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है। |
| 04 | अइंचड़ | मजबूत। यह शब्द सजीव के लिए प्रयुक्त होता है, निर्जीव के लिए नहीं। |
| 05 | अउहंड़ | टेढ़ा। कुटिल काम करने वाले व्यक्ति को अउहंड़ कहते है। |
| 06 | अंसड़ | अरुचिकर। निर्जीव वस्तुओं के लिए ही प्रयुक्त होता है। |
| 07 | अगिया-बैताल | भयंकर काम करने वाला या अत्यंत क्रोधी व्यक्ति अगिया-बैताल कहलाता है। |
| 08 | अपछरा | अप्सरा को बघेली में अपछरा कहते हैं। अत्यंत रूपवती स्त्री के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता है। |
| 09 | उकाठानन्दन | बिगाड़ने वाला। प्रायः अधिक खर्च करने वाले या घर की संपत्ति लुटाने वाले आदमी के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता है। |
| 10 | उजबक | बेसहूर। |
| 11 | कंजहा | कंजा। ऐसा व्यक्ति बड़ा अशुभ और चालाक समझा जाता है। |
| 12 | कुटिहा | मजाकिया। कूट के द्वारा जो मजाक करता है, उसे कुटिहा कहते हैं। |
| 13 | खइंतड़ | झगड़ालू। बिना प्रयोजन के झगड़ा करने वाले को खइंतड़ कहते हैं। |
| 14 | गदहपचीसी | अविवेकी। गधे की तरह मूर्खता करने वाले व्यक्ति के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता है। |
| 15 | गइताल | आलसी। भैंस की तरह आलस्य करने वाले को गइताल कहते हैं। |
| 16 | गोला गराज | गोला की तरह गरजने वाला। यह शब्द पुरुष जाती के ही लिए प्रयुक्त होता है। |
| 17 | गिधरोमा | दुबला। |

**लिंग**

लिंग का अर्थ है चिन्ह। यह ऐसा चिन्ह है जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु की पहचान की जाती है। लिंग दो तरह के हैं- 1. प्राकृतिक, 2. व्याकरणिक। प्राकृतिक लिंग का भेद नर, मादा का भेद है जैसे स्त्री-पुरुष, गाय-बैल, लड़का-लड़की। प्राकृतिक लिंग का विभाजन मुख्यतः सजीवों के लिए है। बघेली भाषा में बहुत ऐसे शब्दों का व्यवहार होता है जो निर्जीव हैं। उन शब्दों को भी बघेली भाषा की व्यवस्था में संयोजित करना होता है। इसलिए संसार की अनेक भाषाओं में उनके व्याकरणिक लिंग का निर्धारण किया गया है। व्याकरणिक लिंग के निर्धारण में प्राकृतिक लिंग की पूर्ण अनुरूपता नहीं मिलती है। लिंग निर्धारण में आकार, रचना, रंग, आदि अन्य आधारों को भी ग्रहण किया गया है। लिंग का संप्रत्यय अर्थात्मक साहचर्य से भी विहीन है। जैसे- ग्रंथ–पुलिंग है और पुस्तक स्त्रीलिंग है। अर्थ की दृष्टि से दोनों एक शब्द हैं। इसी तरह शरीर के अंगों में पेट पुलिंग है, नाक स्त्रीलिंग है, कान पुलिंग है। सड़क आकार की दृष्टि से बड़ी है वह है स्त्रीलिंग और रास्ता छोटा है लेकिन वह है पुलिंग। इससे सिद्ध होता है कि प्राकृतिक और व्याकरणिक लिंग में पूर्ण अनुकारिता नहीं होती है।

बघेली भाषा में लिंग दो प्रकार के हैं–

1) पुलिंग
2) स्त्रीलिंग।

**वचन**

वचन का संबंध मुख्यतः संख्या विधान से है। यह लिंग कि तुलना में अधिक तर्कसंगत आधार लिए हुए है। इसे मुख्यत: नाम कि कोटि माना जा सकता है। क्रिया को भी नाम की कोटि के अनुसार एकवचन और बहुवचन में रूपांतरित करने का विधान मिलता है। विश्व की अधिकांश भाषाओं में वचन की अभिव्यंजना एकवचन तथा बहुवचन के रूप में पाई जाती है। बघेली भाषा में दो वचन हैं एकवचन और बहुवचन।

**पुरुष**

वक्ता और श्रोता की भागीदारी के अनुसार पुरुष के तीन भेद हैं:-

1) उत्तम पुरुष
2) मध्यम पुरुष
3) अन्य पुरुष

वक्ता द्वारा उत्तम पुरुष का प्रयोग अपने लिए किया जाता है। मध्यम पुरुष का प्रयोग सामने उपस्थित श्रोता के लिए होता है और अन्य पुरुष या प्रथम पुरुष वक्ता तथा श्रोता से पृथक व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए होता है।

**काल**

संस्कृत में काल तथा भाव दोनों के लिए लकारों का प्रयोग किया जाता है। नाम पदों की कारकीय भेदकता, जैसे विभक्ति से बनती है उसी तरह क्रिया पदों की काल तथा भावपरक विभेदकता लकारों से निर्मित होती है। काल का प्रमुख विभेद वर्तमान, भूत, भविष्य किया गया है। प्राय: यह मान्यता रही है कि कालभेद विश्व की सभी भाषाओं में उपलब्ध है किंतु यह मान्यता सर्वथा सत्य नहीं है। काल क्रिया की एक महत्वपूर्ण कोटि है। हिंदी की काल व्यवस्था के दो पहलू हैं। एक वह है जो लौकिक जगत से संबंध रखता है, जिसे समय कहा जाता है। दूसरा जिसका संबंध लौकिक जगत से न होकर भाषिक जगत से होता है। काल को कई भाषाविदों ने निम्न रूपों में परिभाषित किया है जो इस प्रकार है:-

डॉ. कामता प्रसाद गुरु के अनुसार-"क्रिया के उस रूपांतर को काल कहते हैं, जिसमें क्रिया के व्यापार का समय तथा उसकी पूर्ण या अपूर्ण अवस्था का बोध होता है। जैसे- मैं जाता हूँ। (वर्तमान काल), मैं जाता था। (भूतकाल), मैं जाऊँगा। (भविष्य काल )।"

डॉ. आर्येन्द्र शर्मा के अनुसार-"क्रिया के जिन रूपों से कार्य-व्यापार के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।"

इस तरह से देखा जा सकता है कि काल के माध्यम से समय का ज्ञान किया जा सकता है,कि कौन किस काल का है। काल में सबसे परिवर्तन क्रिया का होता है। उसी के अनुसार काल का निर्माण होता है।

**पक्ष**

पक्ष एवं काल भाषा में निहित कार्य-व्यापार में काल-बोध के दो आयाम हैं। पहला आयाम वह है जिससे पता चलता है कि समय के धरातल पर कार्य-व्यापार कहाँ घटित हो रहा है। इस स्तर पर काल वर्तमान, भूत, भविष्य के रूप में अभिव्यक्ति होता है, काल-बोध का दूसरा आयाम वह है जो कार्य-व्यापार में आयुक्त काल की अवधि को निर्धारित एवं नियंत्रित करता है। यह स्थितिपरक, आवृत्तिमूलक, सातत्यपरक एवं पूर्णकालिक रूप में होता है।

पक्ष को अप्रत्यक्ष रूप से काल में ही निहित/समाहित माना जाता रहा है। कामता प्रसाद गुरु ने पक्ष की अलग सत्ता नहीं स्वीकारी है बल्कि इसे काल के ही अंतर्गत रखा है।

डॉ. कामता प्रसाद गुरु के अनुसार-"क्रिया के उस रूपांतर को काल कहते हैं जिसमें क्रिया के व्यापार का समय तथा उसकी पूर्ण व अपूर्ण अवस्था का बोध होता है।"

पक्ष की अलग सत्ता मात्र एक दो दशकों से प्रारंभ हुई है। इससे पूर्व किसी भी भाषा में 'पक्ष' को काल के ही एक उपांग के रूप में माना जाता रहा है,पक्ष के संबंध में विभिन्न भाषाविदों के मत इस प्रकार हैं:-

हॉकेट के अनुसार-"Aspect have to do, not with the location of an event in time but with its temporal distribution or contour."

स्वीट के अनुसार-"Aspect is the contrast of distinctions of time independent of any reference to past, present, or future."

डॉ. रवीद्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार-"पक्ष काल-बोध का वह स्तर है जो क्रिया व्यापार में आयुक्त समय विस्तार के बोध को नियंत्रित एवं निर्धारित करता है (यह काल-बोध के उस स्तर से विभिन्न है, जिससे यह पता चलता है कि उस समय के धरातल पर कार्य-व्यापार कहाँ घटित हो रहा है, जैसे-वर्तमान, भूत, भविष्य )।"

डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय के अनुसार- "काल की आंतरिक प्रक्रिया ही 'पक्ष' है।"

उपर्युक्त परिभाषा से कहा जा सकता है कि पक्ष काल के बोध कराने का माध्यम है जिसके द्वारा काल के अंतर्गत निहित प्रक्रिया है जो 'पक्ष' के नाम से जाना जाता है।

**पक्ष के प्रकार**

पक्ष मुख्यतः दो प्रकार के हैं:-

1. पूर्ण पक्ष,
2. अपूर्ण पक्ष

**1. पूर्ण पक्ष**

पूर्ण पक्ष से क्रिया की पूर्णता का बोध होता है। इसमें कार्य-व्यापार को एक समग्र इकाई के रूप में देखा जाता है। इसलिए इसके भेद नहीं बनते।

अपूर्ण पक्ष में कार्य-व्यापार को एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जबकि पूर्ण पक्ष में एक घटना के रूप में। जैसे- 'वह आया' यहाँ 'आया' शब्द में व्यापार के पूर्णता-बोध के साथ-साथ यह भी बोध होता है कि आना को एक समग्र घटना के रूप में देखा गया है।

**2. अपूर्ण पक्ष**

अपूर्ण पक्ष के उपभेद संभव हैं-जिसमें मुख्य रूप से तीन भेद किए जा सकते हैं:-

i) **सातत्यपरक (-रहा):** सातत्यपरक पक्ष से किसी कार्य व्यापार के अस्थिर होने का भाव निहित होता है। जैसे-
1. लड़का खेल रहा है।
2. वह जा रहा है।

ii) **नित्यता बोधक (-ता):** इसे आवृत्ति मूलक पक्ष भी कहते हैं। कार्य व्यापार कि आवृत्ति का बोध होता है,जो नित्य होता है। जैसे-
1. सूरज पूरब से निकलता है।
2. सूरज पश्चिम में अस्त होता है।
3. वह पढ़ता है।

iii) **स्थित्यात्मक :** स्थित्यात्मक पक्ष क्रिया-रूप के द्वारा व्यक्त न होकर संपूर्ण वाक्य गठन से व्यक्त होता है। इस प्रकार के वाक्यों से अस्तित्व या स्थिति का बोध होता है। जैसे-
1. राम डॉक्टर है।
2. सोहन अध्यापक है।
3. वह पेड़ है।

उपर्युक्त पक्ष को मूल पक्ष कहा गया है। क्योंकि ये ऐसे क्रिया-रूपों द्वारा व्यक्त होते हैं जो क्रिया के साथ संयुक्त होकर पक्ष की अभिव्यक्ति करते हैं।

**वृत्ति**

'वृत्ति' वक्ता की वह मनः स्थिति है जो वाक्य में क्रिया रूपों द्वारा व्यक्त होती है। जो कार्य या व्यापार लौकिक जगत में घटित न हुआ हो वरन जो वक्ता के मस्तिष्क में इच्छा, संभावना, अनुमान आदि के रूप में निहित हो, उसका संबंध वृत्ति से होता है। कुछ व्याकरणों में वृत्ति संबंधी धारणाएँ प्रमुख हैं जो इस प्रकार हैं:-

डॉ. आर्येन्द्र शर्मा के अनुसार-"क्रिया के उन रूपों को वृत्ति कहते हैं जो कार्य के घटित होने की रीति को बताते है (अर्थात् कोई कार्य मात्र घटित होता है या उसे करने का आदेश दिया जाता है अथवा यह किसी विशेष अवस्था पर निर्भर होता है)।"

डॉ. सत्यकाम वर्मा के अनुसार-"पदार्थ या अंतर्हित अर्थ को स्पष्ट करने की विश्लेषण पद्धति को ही वृत्ति कहते है। इसके द्वारा वाक्य में छिपी भावना को ढूँढ निकालने का प्रयत्न किया जाता है, साथ ही क्रिया संपन्नता में कई अर्थ जुड़े होते हैं उनमें एक वृत्ति भी एक है।"

सी. एफ. हॉकेट के अनुसार-"Moods show differing degree of kinds of reality, desirability or contingency of an event"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि 'वृत्ति' का संबंध लौकिक जगत से न होकर वक्ता के मस्तिष्क में स्थित संभावना, इच्छा, आज्ञा, विवशता आदि से है।

**संदर्भ-सूची**


1. अग्रवाल डॉ. चमनलाल (1981) हिंदी रूप विज्ञान, अग्रवाल प्रकाशन नई दिल्ली।
2. सिन्हा डॉ.लक्ष्मण प्रसाद (1983) हिंदी भाषा का रुपिमीय विश्लेषण, अंशुकमल प्रकाशन पटना विहार।
3. सिंह डॉ. सुधाकर (1988) समसामयिक हिंदी में रूप स्वनिमिकी, शिक्षा निकेतन, वाराणसी।
4. उप्रेती डॉ. मुरलीलाल (2009) हिंदी में प्रत्यय एवं पश्चाश्रयी-विचार, आलेख प्रकाशन नई दिल्ली।
5. ग्रियर्सन जार्ज अब्राहम : लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, खण्ड 6।
6. शुक्ल डॉ. भगवती प्रसाद (2010) बघेली भाषा और साहित्य, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबाद।
7. Bharti Akshar Chaitanya Vineet Sangal Rajeev, (2000) Natural Language Processing (A Paninian Prespective), Prentice Hall of India Private Limited New Delhi.
8. पाण्डेय डॉ. अनिल कुमार (2010) हिंदी संरचना के विविध पक्ष, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली।
9. जैन डॉ. महावीर सरन (1985) भाषा एवं भाषा विज्ञान, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद।
10. श्रीवास्तव डॉ. नमिता (2010) अवधी का रूपग्रामिक अध्ययन, विकास प्रकाशन कानपुर।
11. शर्मा डॉ. रामकिशोर शर्मा (2004) आधुनिक भाषाविज्ञान के सिद्धान्त, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद।
12. Singh Pawan Deep, Kore Archana, Sugandhi Rekha, Arya Gaurav, Jadhav Sneha, (2013), Hindi Morphological Analysis and Inflection Generator for English to Hindi Translation, International Journal of Engineering and Innovative Technology (IJEIT) Volume 2, Issue 9.
13. Agarwal Ankita, Pramila, Singh Shashi Pal, Kumar Ajai, Darbari Hemant, (2014), Morphological Analyzer for Hindi – A Rule Based Implementation International Journal of Advanced Computer Research, Volume-4 Number-1 Issue-14.
14. Kumar Deepak, Singh Manjeet, and Shukla Seema, FST Based Morphological Analyzer for Hindi Language, Department of Information Technology, JSS Academy of Technical Education Noida, Uttar Pradesh, India.
15. Bapat Mugdha, Gune Harshada, Bhattacharyya Pushpak, A Paradigm-Based Finite State Morphological Analyzer for Marathi, Department of Computer Science and Engineering, Indian Institute of Technology Bombay.
16. Jha Girish Nath, Agrawal Muktanand, Subash, Mishra Sudhir K., Mani Diwakar, Mishra Diwakar, Bhadra Manji, Singh Surjit K., Inflectional Morphology Analyzer for Sanskrit, Special Centre for Sanskrit Studies Jawaharlal Nehru University New Delhi-110067.
17. Goyal Vishal, Singh Gurpreet Lehal, Hindi Morphological Analyzer and Generator, Department of Computer Science, Punjabi University, Patiala India.
18. https://en.wikipedia.org/wiki/Bagheli_language
19. http://www.indiamapped.com/languages-in-india/madhya-pradesh-bagheli-language/
20. http://hi.bharatdiscovery.org/india/बघेली_बोली
21. http://rimhi.blogspot.in/2012/01/blog-post_23.html
22. https://www.patrika.com/satna-news/mother-language-day-special-bagheli-language-in-mp-rimahi-language-2398369/
23. http://www.worldlibrary.in/articles/eng/Bagheli
24. https://www.google.co.in/search?q=bagheli+dialects